# पशुपालक मित्र

पशुपालन को समर्पित त्रिमासिक पत्रिका

वर्ष : 2  अंक : 3  जुलाई, 2022  कुल पृष्ठ : 19  ISSN: 2583-0511(Online)

Visit us: www.pashupalakmitra.in

# पशुपालक मित्र

पशुपालन को समर्पित त्रिमासिक पत्रिका ISSN: 2583-0511(Online)

## संपादिकीय पैनल

**प्रधान संपादक**

डॉ. सतीश कुमार पाठक
असिस्टेंट प्रोफेसर, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

**संपादक**

***पशु प्रजनन एवं मादा रोग विशेषज्ञ***

1. डॉ.आशुतोष त्रिपाठी
   असिस्टेंट प्रोफेसर
   स.व.प. कृषि वि.वि., मेरठ
2. डॉ. विकास सचान
   असिस्टेंट प्रोफेसर
   दुवासू , मथुरा

***पशु पोषण विशेषज्ञ***

1. डॉ. दिनेश कुमार
   असिस्टेंट प्रोफेसर
   जे.एन.के.वि.वि., जबलपुर
2. डॉ. संदीप कुमार चौधरी
   असिस्टेंट प्रोफेसर, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

***पशुधन उत्पादन एवं प्रबन्धन विशेषज्ञ***

1. डॉ. ममता
   असिस्टेंट प्रोफेसर
   दुवासू , मथुरा
2. डॉ. अजीत सिंह
   असिस्टेंट प्रोफेसर
   काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
3. डॉ. विपिन मौर्य
   असिस्टेंट प्रोफेसर
   काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

***पशु औषधि विशेषज्ञ***

1. डॉ. नीरज ठाकुर
   असिस्टेंट प्रोफेसर
   काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

**वर्ष : 2 अंक: 3 जुलाई, 2022**

| क्रमांक | लेख का शीर्षक | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 1. | **गर्मियों के मौसम में पशुओ को तापघात(हीट स्ट्रोक) से बचाये :** डॉ.राजेश नेहरा | 3–4 |
| 2. | **बकरी पालन आरंभ करने हेतु कुछ अत्यंत महत्वपूर्ण जानकारियां :** डॉ.संजय कुमार मिश्र ,डॉ. मुकुल आनंद एवं डॉ. सर्वजीत यादव | 5-6 |
| 3. | **व्यावसायिक पशुपालन पद्धतियों में पशु कल्याण :** डॉ. ममता, डॉ. मानव सिंह, डॉ .रजनीश सिरोही, डा. दीप नारायण सिंह एवं डॉ. अजय | 7-9 |
| 4. | **बैकयार्ड कुक्कुट पालन :** डॉ. आदित्य चंद्राकर एवं डॉ. नृपेन्द्र प्रताप सिंह | 10-12 |
| 5. | **पालतू पशुओं में किलनी ज्वर/ चिंचडी बुखार(बबेसिओसिस) – कारण एवम् निवारण :** डॉ. देवेन्द्र प्रसाद पटीर, डॉ. श्याम लाल गर्ग, डॉ. हितेश्वर सिंह यादव एवं डॉ. अविनाश कुमार चौहान | 13-15 |
| 6. | **पशुओ के लिए सम्पूर्ण संघनित आहार खण्ड (फीड ब्लॉक):** डॉ. अशोक कुमार पाटिल, डॉ. गया प्रसाद जाटव एवं डॉ. विवेक अग्रवाल | 16-18 |

नोट: लेख में वर्णित सूचनाओं का दायित्व लेखक का होगा, संपादक का नही ।

**Visit us: www.pashupalakmitra.in**

**संपर्क सूत्र**

प्रधान संपादक
डॉ. सतीश कुमार पाठक,
असिस्टेंट प्रोफेसर,पशुशरीर रचना शास्त्र विभाग,
पशुचिकित्सा एवं पशुविज्ञान संकाय,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, बरकछा,
मिर्जापुर-231001, उत्तर प्रदेश
ईमेल आई डी: pashupalakmitra1@gmail.com

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

# गर्मियों के मौसम में पशुओ को तापघात(हीट स्ट्रोक) से बचाये

*डॉ.राजेश नेहरा*

***पशु पोषण विभाग, पशु चिकित्सा एवम पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर***

अप्रेल–मई एवं जून के महीनो में हमारे यहाँ वातावरण का तापमान अत्यधिक होता है असका सीधा असर पशुओ के उत्पादन पर पड़ता है सामान्यता गाय भंसो का शारीरिक तापमान 38.8 +0.5 $^{0}$सेंटीग्रेड (101.5 से 102.5$^{\circ}$ फोरेनहाईट ) होता है एवम् समतापी होने के कारण इनको अपने शरीर का तापमान बढते वातावरण के तापमान में भी सामान्य बनाये रखने हेतु अनुकूलतम ऊष्मा क्षय करना जरुरी है ये ऊष्मा क्षय वातावरण के तापमान ,हवा में नमी तथा हवा कि गति पर निर्भर करती है गर्मी में यदि पशु अपने शरीर का तापमान सामान्य बनाये रखने में विफल रहता है तो इसे तापघात (हिटस्ट्रोक ) कहते है ऐसी स्तिथि में पशु का तापमान बढ जाता है तथा दुग्ध उत्पादन असामान्य रूप से कम हो जाता है तथा पशु बीमार हो जाता है | अधिक दूध उत्पादन करने वाले पशु इससे अधिक प्रभावित होते हैं क्यूंकि अधिक दूध देने वाले पशुओं में ऊष्मा का उत्पादन भी अधिक होता है |

**तापघात के लक्षण**:

1. तापघात से प्रभावित पशु सुस्त हो जाते है |
2. पशु अपना सिर नीचा रखते है तथा मुहं खोलकर साँस लेते है |
3. मुहं से लगातार लार गिरती रहती है एवं लार गिरने से खनिज लवणों का क्षय होता है |
4. पशु की श्वास गति एवं शरीर का तापमान बढ़ जाता है |
5. पशु का दूध उत्पादन अचानक अत्यधिक गिर जाता है |
6. पेशाब की मात्रा कम हो जाती है तथा नाक व नथुने सुख जाते है |
7. अत्यधिक तापमान से मस्तिष्क पर असर पड़ता है एवं पशु की मौत भी हो जाती है |

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

**बचाव के उपाय-**

**आहार प्रबंधन-**

1. पशुओं को चारा-दाना रात्रि में या देर शाम को 7-8 बजे के आस-पास एवं सुबह जल्दी 5-6 बजे देवें क्यूंकि चारा खाने के बाद पशु के शरीर में ऊष्मा का उत्पादन होता है। अतः दिन में और विशेषकर दोपहर में चारा-दाना कतई नहीं देवें।

2. पशुओं को अधिक से अधिक हरा चारा देवें इससे शरीर को आवश्यक खनिज तत्व एवं पानी कि पूर्ती होती रहेगी एवं हरा चारा पचाने में भी आसान रहता है।

3. पशुओं के आहार में सूखे चारे की मात्रा कम रखनी चहिये क्योंकि इनके पाचन से जो वाष्पशील वसा अम्ल बनते हैं उनसे उनसे अधिक ऊष्मा उत्पादन होता है। अतः आहार में दाने की मात्रा अधिक रखनी चाहिए।

4. पशु आहार में 40-50 ग्राम नमक एवं 40-50 ग्राम खनिज लवण व विटामिन अवश्य देवें।

5. पीने का पानी हमेशा शुद्ध, शीतल एवं हमेशा उपलब्ध होना चाइये। पीने के पानी को गर्म स्थान पर नहीं रखे। दिन में 3-4 बार पानी पिलावें।

**आवास प्रबंधन-**

1. पशुओं का बाड़ा खुला, हवादार होना आवश्यक है ताकि हवा कि गति बनी रहे। ताप घात का सबसे अधिक असर आर्द्रता अधिक होने पर होता है अतः पशु शाला का ऊपर की छत के पास का भाग आवश्यक रूप से खुला होना चाहिए।

2.पशु शाला में टाट बोरियां आदि भिगोकर लगनी चाहिए एवं पंखो व पानी के फवारों का उपयोग भी तापमान नियंत्रण में किया जा सकता है

कूलर का उपयोग उसी स्तिथि में करे जब हवा आर पार जा सकती हो।

3. पशु शाला की छत पर बचा हुआ चारा, फूस घास आदि दाल कर ठण्डी रखनी चाहिए।

4. पशुओं को सुबह शाम नहलाना चाहिए एवं उनके सिर पर पानी अवश्य डालना चाहिए। दिन के समय ठंडे पानी की पट्टी सिर पर रखी जा सकती है।

भैंसों में तापघात कि ज्यदा सम्भावना रहती है क्योंकि उनके शरीर का रंग काला एवं शरीर पर बाल भी कम होतें हैं अतः उनको दिन में दो बार अवश्य नहलाना चाहिए अगर संभव हो तो दिन के समय भैंसों को तालाब या जोहड़ में छोड़ना चाहिए।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

# बकरी पालन आरंभ करने हेतु कुछ अत्यंत महत्वपूर्ण जानकारियां

*डॉ.संजय कुमार मिश्र[१] 'डॉ. मुकुल आनंद[२] एवं डॉ. सर्वजीत यादव[३]*

१. पशु चिकित्सा अधिकारी मथुरा उत्तर प्रदेश
२. सहायक आचार्य पशु शरीर क्रिया विज्ञान विभाग दुवासु मथुरा उत्तर प्रदेश
३. निदेशक प्रसार दुवासु मथुरा उत्तर प्रदेश

19वीं पशुगणना के अनुसार पूरे भारत में बकरियों की कुल संख्या 13.517 करोड़ है उत्तर प्रदेश में इनकी संख्या 42 लाख 42 हजार 904 है।

कई दशकों से गरीब ग्रामीणों के लिए बकरी एक जीवन आधार का कार्य कर रही है। बकरी पालन एक ऐसा व्यवसाय है जो तुलनात्मक रूप से बहुत कम पूंजी में आरंभ किया जा सकता है एवं चारे के सार्वजनिक स्रोतों पर भी निर्भर रह कर आमदनी का निरंतर स्रोत हो सकता है। विगत वर्षों से पारंपरिक बकरी पालन धीरे धीरे व्यवसाय का रूप ले रहा है। आज के परिवेश में बकरी पालन केवल एक सहायक व्यवसाय के रूप में ही नहीं बल्कि एक अच्छी संभावनाओं वाले मुख्य व्यवसाय के रूप में स्थान बना रहा है। अन्य पशुओं को पालने की तुलना में बकरी पालन आर्थिक एवं प्रबंधकीय दृष्टिकोण से कई प्रकार से लाभप्रद है, क्योंकि बकरी पालन प्रारंभिक कम निवेश कम लागत की आवश्यकता है उच्च प्रजनन क्षमता विस्तृत प्रजनन काल भोजन के रूप में बड़ी संख्या में पौधों को चरण कम अवस्था में प्रजनन परिपक्वता निम्न स्तर के मोटे चारे के रेशों को पचाने की क्षमता आसान देखभाल वर्ष भर विक्रय की सुविधा और अनेक रोगों के प्रति प्रतिरोधी जैसी विशेषताओं से संपन्न है यह महिलाओं के लिए भी उपयुक्त है तथा इसे ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए प्रयोग में लाया जा सकता है। बकरी पालन किसानों की सन 2024 तक आय दोगुनी करने का महत्वपूर्ण साधन बन सकती है। बकरी के दूध में अनेकों पोषक तत्व और औषधीय गुण मौजूद हैं। यह अधिकतर विशेषताएं या तो केवल बकरी के दूध में होती हैं या फिर गाय के दूध से तुलनात्मक रूप से अधिक होती हैं । बकरी पालन आरंभ करने से पूर्व निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिये-

- बकरियों की प्रजाति का चुनाव बकरी पालन के उद्देश्य एवं स्थानीय वातावरण को ध्यान में रखते हुए ही करना चाहिए । बकरी पालन व्यवसाय के लिए उन्नत नस्ल के प्रजनक बकरे बाहर से लाकर स्थानीय बकरियों से ही नस्ल सुधार का कार्य करना चाहिए ।

- प्रजनन बकरा खरीदते समय विशेष ध्यान रखना चाहिए कि बकरे की मां अधिक दूध व अधिक बच्चे देने वाली होनी चाहिए बकरा शारीरिक रूप से पूर्ण तथा स्वस्थ एवं उन्नत नस्ल का होना चाहिए।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

- जो बकरी पालक या व्यवसाय बकरी के दूध उत्पादन और प्रसंस्करण के लिए बकरी पालन आरंभ कर रहे हैं उन्हें ऐसी नस्ल एवं बकरियों का चुनाव करना चाहिए जिनमें दूध उत्पादन एवं दुग्ध काल अधिक हो। सामान्यता बीटल, जखराना, जमुनापारी, बरबरी नस्ल की बकरियां अधिक दुग्ध उत्पादन के लिए जानी जाती है। ऐसे नर का चुनाव करें जिसकी मां का दूध उत्पादन 3 लीटर प्रतिदिन एवं 150 दिन के दुग्ध काल में 200 लीटर दूध देने की क्षमता रही हो। यदि दूध उत्पादन का लेखा उपलब्ध हो तो दुधारू बकरियां एवं उनकी बच्चियों का चुनाव सही ढंग से करने में सटीक जानकारी मिल जाती है।

- मांस उत्पादन के लिए बकरी पालन का एक मुख्य सूत्र है की प्रति बकरी प्रतिवर्ष अधिकतम मांस उत्पादन। अतः जिन नस्लों में अधिक बच्चे देने वाली दो ब्यात के मध्य कम अंतराल बच्चों के लिए मां के पास पर्याप्त दूध, कम मृत्यु अधिक आहार पाचन क्षमता, अधिक मास हड्डी अनुपात आदि हो तो उनका चयन करें। नियमित मास बाजार के लिए नारों को नस्ल की बाजार मांग के अनुरूप 10 से 14 माह के अंदर बेच दे क्योंकि 10 से 12 माह के बाद नरो की खाना खाने की दर बढ़ जाती है परंतु वजन वृद्धि कम हो जाती है। और इसके साथ ही साथ मांस की गुणवत्ता एवं स्वाद में भी कमी आ जाती है। बरबरी नस्ल के नर बकरों का 9 माह से 16 माह की उम्र तक मांस उत्पादन के लिए अधिक मूल्य मिलता है तथा इस उम्र में ड्रेसिंग पृथ्वी अधिकतम 50 से 55% होता है।

- आरंभ मे उच्च आनुवंशिक क्षमता वाले 30 से 50 पशुओं के साथ बकरी फार्म शुरू करें ताकि 1 वर्ष में बकरी उत्पादन और प्रबंधन के सभी पहलुओं को न्यूनतम जोखिम के साथ समझा जा सके। हालांकि 2 वर्ष में आवास की जगह पशुओं की उपलब्धता और बाजार की मांग के आधार पर झुंड की संख्या बढ़ाई जा सकती है।

- जिन बकरियों की वृद्धि दर प्रसवता दर एवं उत्पादन सामान्य से कम हो उन्हें समय-समय पर फार्म से निष्कासित करते रहना चाहिए।

पशुपालक मित्र 2(3):7-9 ; जुलाई, 2022
ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in


# व्यावसायिक पशुपालन पद्धतियों में पशु कल्याण

*डॉ. ममता, डॉ. मानव सिंह, डॉ. रजनीश सिरोही, डा. दीप नारायण सिंह एवं डॉ. अजय*

***पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय***
***दुवासु, मथुरा***

व्यावसायिक पशुपालन पद्धतियों में पशु कल्याण पशुपालन की प्रबंधन प्रणाली की सफलता के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। पशु कल्याण को दृष्टिगत करते हुए पशुपालन का मूल सिद्धांत फार्म व्यवस्था को पशुओं के लिए अनुकूल बनाना होना चाहिए न कि पशुओं को फार्म व्यवस्था के। डेयरी व्यवसाय में गहन पशुपालन व्यवस्था के प्रचलित होने से पशुओं के कल्याण में कहीं न कहीं कमी आई है। हालांकि हमारे देश में वाणिज्यिक संगठित फार्म बहुत सीमित हैं लेकिन छोटे और बड़े दोनों फार्मों में पशु कल्याण के मुद्दे हमेशा बने रहते हैं। संगठित और गहन पशुपालन व्यवस्था में कुछ महत्वपूर्ण मुद्दों पर नीचे चर्चा की गई है-

## पहचान चिन्ह देना

पशु कल्याण और अधिकार कार्यकर्ताओं ने गर्म ब्रांडिंग के उपयोग की कड़ी आलोचना की है, कई देशों में यह पशुधन कल्याण नियमों के प्रावधान के तहत एक निषिद्ध ऑपरेशन है। यहाँ इसके विकल्प के बारे में विचार किया जा सकता है क्यूंकि फ्रीज ब्रांडिंग हॉट ब्रांडिंग की तुलना में कम दर्दनाक होता है। इसके अतिरिक्त टैगिंग का उपयोग करते समय यह ध्यान देने कि आवश्यकता है कि कान के टैग एक प्रशिक्षित और सक्षम ऑपरेटर द्वारा लगाए जाने चाहिए ताकि पशुओं को अनावश्यक दर्द या परेशानी न हो।

## सींग दागना

डिहॉर्निंग (सींगे हटाना) की तुलना में डिस्बडिंग (सींगे की कली हटाना) पशु के लिए बेहतर है क्योंकि यह पशुओं के लिए कम तनावपूर्ण होती है। आदर्श रूप से यह बछड़ों के 2 महीने के होने से पहले किया जाना चाहिए (जैसे ही सींग की कलियों को देखना संभव हो)। इसे एक प्रशिक्षित और सक्षम स्टॉक कीपर द्वारा लोकल अनेस्थेटिक के तहत गर्म लोहे के साथ किया जाना चाहिए। रासायनिक विधि से सींग दागना दागना पशु कल्याण के हित में नहीं होता है

## दूध छुड़वाना

खुले बर्तन से दूध पिलवाने पर बछड़ों के नैसर्गिक थनो को चूसने के व्यवहार को संतुष्टि नहीं मिलती। जिससे आगे चलकर पारस्परिक मुंह को चूसने जैसे दोषों कि प्रचुरता बढ़ती जाती है।

## दोहन सम्बन्धी मुद्दे

दूध दोहने वाले को सभी दुग्ध दोहन प्रक्रियाओं को करने के लिए सक्षम होना चाहिए। आदर्श रूप से ग्वालो को औपचारिक प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। यदि मशीन द्वारा दोहन होता हो तो सुनिश्चित करें कि प्रत्येक सत्र में दूध देने वाली मशीन ठीक से काम कर रही है। रोबोटिक दुग्ध दोहन श्रम का अधिक कुशल उपयोग करने का अवसर प्रदान करता है। प्रतिदिन कम से कम दो बार रोबोटिक प्रणाली का मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

## शुष्क करना

प्रसव पूर्व गायों को शुष्क करने के लिए आहार और पानी में कमी करके एकाएक दूध दोहन छोड़ दिया जाता है। गायें के थन में बढ़े हुए दूध के दबाव के कारन पशु लेटने में लगने वाले समय को कम कर देती हैं, जोकि होने वाली बेचैनी का सूचक है।

## थनेला रोग

खराब आवास व्यवस्था और गाय की सफाई से थनेला रोग की दर बढ़ सकती है, जबकि बार-बार बिस्तर बदलने और दूध देने वाले पार्लर की स्वच्छता इसके जोखिम को कम कर सकती है। खुली आवास व्यवस्था में स्वच्छता को बढ़ाकर और थनों की चोट की घटनाओं को कम करने से थनेला रोग के जोखिम को भी कम किया जा सकता है।

## फर्श और बिछावन

गायों के लिए आरामदायक मुद्रा में बैठना बहुत महत्वपूर्ण है और खाने या अन्य सामाजिक व्यवहार की तुलना में इसे उच्च प्राथमिकता दी जाती है। पशु आवास में फर्श प्रथागत रूप से ठोस होता है, क्योंकि यह सस्ती है और इसे साफ करना आसान माना जाता है। हालाँकि, यह गायों के लिए समस्या पैदा कर सकता है क्योंकि यह मूत्र के साथ कठोर, घर्षण और फिसलन वाली होती है।

बिछावन के प्रावधान से दुग्ध देने वाली गायों के आराम और स्वच्छता में सुधार होता है। अच्छी बिछावन सामग्री वह होती है जो नरम कृत्रिम हो और जो संक्रमण के जोखिम को बढ़ाए बिना आराम प्रदान करती हो। कार्बनिक पदार्थ जैसे पुआल या लकड़ी का बुरादा जीवाणु के विकास के लिए एक उत्पाद के रूप में कार्य कर सकते हैं और थनेला रोग के जोखिम को बढ़ा सकते हैं।

**व्यायाम**

बाँध कर रखे गए पशुओं में प्राकृतिक गतिविधियों जैसे चलना, खोजपूर्ण व्यवहार और अपने को संवारना और चाटना गंभीर रूप से सीमित कर दिए जाते है। आवास व्यवस्था ऐसी हो जो की गायों को व्यायाम करने के लिए अत्यधिक प्रेरित के सके और उसके अवसर प्रदान कर सके। गायों को प्रतिदिन कम से कम एक घंटे का व्यायाम अवश्य करने दें।

**पोषण प्रबंधन संबन्धित मुद्दे -**

पशुओं को उनकी उम्र और प्रजातियों के अनुरूप पर्याप्त मात्रा में पौष्टिक आहार दिया जाना चाहिए ताकि उन्हें अच्छे स्वास्थ्य में रखा जा सके और उनकी पोषण संबंधी जरूरतों को पूरा किया जा सके। खिलाने के अंतराल, पानी पिलाने, जहरीले खरपतवार आदि का ध्यान रखें।

दुग्ध काल में गाय के लिए पोषण की आवश्यकता अत्यधिक बढ़ जाती है। जो ऊर्जा की कमी को पूरा करने के लिए पर्याप्त खाने में असमर्थ हों, उन्हें यह विशाल चयापचय प्रक्रिया नकारात्मक ऊर्जा बैलेंस में डाल सकती है। वसा भंडार के अत्यधिक एकत्रीकरण से कीटोसिस हो सकता है, जो गंभीर मामलों में तंत्रिका तंत्र में गड़बड़ी जैसे कि चक्कर लगाना, भटकना और अत्यधिक लार आना जैसे लक्षण पैदा कर सकता है।

स्तनपान की शुरुआत के साथ दूध में कैल्शियम की अचानक कमी की भरपाई आहार सेवन या कंकाल कैल्शियम रिजर्व से पर्याप्त रूप से नहीं की जा सकती है। दुग्ध ज्वर , ऐसा ही एक अन्य रोग जो सामान्यतः अधिक उत्पादन करने वाली गायों को प्रभावित करता है।

**प्रजनन प्रबंधन संबन्धित मुद्दे**

प्रजनन तकनीकों के व्यापक उपयोग के परिणामस्वरूप चयनित सांडों का एक अपेक्षाकृत छोटा जीन पूल बन गया है, जिसके परिणामस्वरूप जैव विविधता में कमी आई है और अंतःप्रजनन में वृद्धि हुई है। इनब्रेड गायों को थनेला, कम प्रजनन क्षमता और उत्पादन का खतरा बढ़ सकता है। जहां संभव हो प्रजनन सांडो को अन्य पशुओं के साथ रखा जाना चाहिए। सांड को फार्म की गतिविधियों को देखने और सुनने के अवसर मिलने चाहिए।

पशुओं के कल्याण को ध्यान में रखते हुए उनसे व्यवहार करें जैसे कि सकारात्मक बातचीत का उपयोग करें (टीकाकरण जैसे अप्रिय अनुभव को कम करने के लिए भोजन आदि का इनाम दें ) अत्यधिक आवाज न करें, गायों को लंबे समय तक न घूरें, दुग्ध पार्लर में दर्दनाक प्रक्रियाओं से बचें, पशुओं को व्यक्तिगत रूप से नहीं बल्कि समूह में लेकर चले।

पशुपालक मित्र 2(3): 10-12 ; जुलाई, 2022
ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in 

# बैकयार्ड कुक्कुट पालन

*डॉ. आदित्य चंद्राकर एवं डॉ. नृपेन्द्र प्रताप सिंह*

***पशु राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संसथान करनाल, हरियाणा***

घर के पिछवाड़े मे छोटे स्तर पर मुर्गियों को घरेलू श्रम और स्थानीय उपलब्ध दाना-पानी का उपयोग करते हुए बिना किसी विशेष आर्थिक व्यय के पालन पोषण को बैकयार्ड कुक्कुट पालन कहते है। कुक्कुट पालन आर्थिक रूप से पिछड़े हुए लोगों को आर्थिक स्वावलंबन दिलाने मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

## बैकयार्ड कुक्कुट पालन-

प्रायः दोहरे उपयोग वाली मुर्गियों का उपयोग बैकयार्ड कुक्कुट पालन के लिए किया जाता है।इसमे मुर्गियाँ घर की चारदीवारी के अंदर स्वतः विचरण करते हुए आपना खाना पीना खुद खोजती हैं। बैकयार्ड कुक्कुट को पालने के लिए किसी विशेष घर की आवश्यकता नहीं होती है । मुर्गीयों को प्रायः बांस की टोकरी अथवा कार्ड बोर्ड के बक्से मे रात को शिकारियो से बचाने के लिए रखा जाता है।ये अधिकतर रसोई अवशिष्ट, टूटे हुए अनाज के दाने, कीड़े मकोड़ों आदि को खाकर जिंदा रहती हैं। इन्हे सिर्फ कुछ मात्रा मे अलग से घटा हुआ दाना-पानी देने की आवश्यकता होती है। इन्हे अंडा देने के दिनों मे अच्छी शेल की क्वालिटी के लिए शैल ग्रिट अथवा मार्बल के छोटे छोटे टुकड़े प्रतिदिन 5-7 ग्राम/ पक्षी देना चाहिए।

## बैकयार्ड मुर्गी पालन के लिए नस्ल-

बैकयार्ड मुर्गी पालन में नस्लों का चुनाव बेहद जरूरी है । अच्छी नस्ल की मुर्गी ही आपको बाजार में मुनाफा कमा दिला सकती है , इसलिए आपको बैकयार्ड मुर्गी पालन की उन्नत नस्लों का चुनाव करना चाहिए, ताकि आप अधिक से अधिक लाभ कमा सकें । जैसे, असील, कड़कनाथ, ग्रामप्रिया, स्वरनाथ, केरी श्यामा, निर्भीक, श्रीनिधि, वनराजा, कारी उज्जवल और कारी आदि ।

## ऐसे करें बैकयार्ड मुर्गी पालन की शुरुआत-

इस व्यवसाय को शुरू करने के लिए आप ऊपर बताई गई नस्लों में से किसी भी नस्ल की मुर्गी का पालन कर इस बिजनेस को सरलता से शुरू कर सकते हैं । अगर आप देसी मुर्गी का पालन करते हैं , तो बाजार में देसी मुर्गी के 1दिन के चूजों की कीमत करीब 30 से 60 रुपए होती है और सालभर में देसी मुर्गी लगभग 160 से 180 अंडे देती हैं. देसी मुर्गी के अंडे की कीमतभी अधिक होती है. जिससे आपको अच्छा लाभ होगा ।

## बैकयार्ड कुक्कुट पालन के लाभ

1. इसके लिए बहुत कम जमीन, श्रम एवं पूंजी की आवश्यकता होती है।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

2. यह गाँव के लोगों को फसल की बर्बादी या अन्य आपात स्थितियों मे अतिरिक्त आय प्रदान कर जीने की सुरक्षा देता है।

3. यह बच्चों एवं औरतों मे प्रोटीन कुपोषण से मुक्ति दिलाने मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

4. यह अवशिष्ट पदार्थों जैसे रसोई अवशिष्ट कीड़े मकोड़ो को उच्च प्रोटीन वाले अंडे एवं मांस मे बदलकर खाद्य सुरक्षा एवं पर्यावरण सुरक्षा मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

5. मुर्गी के विष्टा से भूमि उपजाऊ होती है।

6. यह ग्रामीण परिवेश मे पिछड़े लोगों को स्वरोजगार प्रदान करता है।

**बैकयार्ड कुक्कुट की विशेषताएँ**

1. इनका प्लुमेज अर्थात पंख आकर्षक रंगीन होना चाहिए।

2. इनमे प्रतिकूल परिस्थितियों मे भी बढ्ने की क्षमता होनी चाहिए।

3. मुर्गियों मे ब्रूडीनेस नहीं होनी चाहिए।

4. इनके अंडे तथा मांस का स्वाद, सुगंध, रंग एवं पोषक तत्व देशी मुर्गी के समान होना

चाहिए।

5. इनके मांस मे वसा की मात्र कम होनी चाहिए।

6. इसमे बीमारी प्रतिरोधक क्षमता होनी चाहिए।

7. इंका वजन आठ सप्ताह मे कम से कम 1.25 किलोग्राम तथा आहार रूपान्तरण 2.2

होना चाहिए।

8. मृत्यु दर आठ सप्ताह की उम्र तक 2 प्रतिशत से कम होनी चाहिए।

9. अंडे की हैचेबिलिटी 80 प्रतिशत के आस पास होनी चाहिए।

**बैकयार्ड कुक्कुट पालन हेतु आवास पर सब्सिडी-**

बैकयार्ड कुक्कुट इकाई वितरण योजना अंतर्गत पक्षियों के पालन –पोषण, रख–रखाव तथा आवास व्यवस्था हेतु पृथक से किसी राशि की आवश्यकता नहीं होती है इसलिए आवास के लिए किसी प्रकार का पैसा नहीं दिया जायेगा | हितग्राही कुक्कुट पालन को घर पर ही करना होगा |

**बैकयार्ड कुक्कुट पालन योजना पर हितग्राहियों को दिया जाने वाला अनुदान-**

कुक्कुट, बत्तख या बटेर के चूजे के लिए राज्य सरकार सब्सिडी दे रही है | सामान्य वर्ग के लिए लागत का 75 प्रतिशत तथा अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लिए 90 प्रतिशत की सब्सिडी लाभार्थियों को दी जाएगी |

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

पशुपालक मित्र 2(3): 13-15 ; जुलाई, 2022
ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in 

# पालतू पशुओं में किलनी ज्वर/ चिंचडी बुखार(बबेसिओसिस) –कारण एवम् निवारण

*डॉ. देवेन्द्र प्रसाद पटीर, डॉ. श्याम लाल गर्ग, डॉ. हितेश्वर सिंह यादव एवं डॉ. अविनाश कुमार चौहान*

***परजीवी विज्ञान विभाग, भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, बरेली***

राष्ट्र के आर्थिक विकास में कृषि एवम् पशुपालन का अहम योगदान है। उत्तम पशु उत्पादन पशु के स्वास्थ्य पर निर्भर करता है। विभिन्न संक्रामक बिमारियों में से बबेसिओसिस भी एक घातक अन्तः परजीवी रोग है, जिसका प्रसार किलनी/ चिंचड से होता है। यह रोग मवेशियों, भेड़- बकरियों, घोड़ों, सुअरों तथा कुतों में पाया जाता है परन्तु सर्वाधिक आर्थिक नुकसान दुधारू मवेशियों में करता है। देशी नस्ल व बछड़ों में रोग प्रतिरोधक क्षमता के कारण बबेसिओसिस का संक्रमण कम होता है , जबकि विदेशी व संकर नस्ल संक्रमण के लिए अत्यधिक संवेदनशील होती है ।

## कारण

मानव में मलेरिया कि भाँति पशुओं में बबेसिओसिस नामक रोग पाया जाता है जो कि एककोशिकीय रक्त प्रोटोज़ोअन, बबेसिआ की विभिन्न प्रजातियों के संक्रमण से फैलता है। ये परजीवी अत्यंत सूक्ष्म व् नाशपाती के आकार के होते हैं तथा बीमार जानवर के लाल रुधिर कणिकाओं के अंदर पाये जाते है । इस रोग का प्रसार रिफिसिफेलिस प्रजाति के किलनी/ चिंचड के रक्त चूसने से होता है। अगर पशु बबेसिआ संक्रमित है तो किलनी खून चूसते समय संक्रमण ग्रहण कर लेती है तथा लैंगिक जनन के द्वारा परजीवियों की संख्या बढ़ती है। मादा किलनी/चिंचड अपने अंडे के द्वारा संक्रमण को अपनी संतति में भी स्थानांतरण कर देती है। ये संक्रमित किलनी/ चिंचड जब स्वस्थ पशु का खून चुस्ती है तो संक्रमण पशु के रक्त में छोड़ देती है। पशु की लाल रुधिर कणिकाओं में अलैंगिक जनन के द्वारा बबेसिआ की संख्या बढ़ जाती है तब रोग के लक्षण दिखाई देने लगते है व पशु बीमार पड़ जाता है।

## रोग के प्रमुख लक्षण

परजीवी के रक्त में पहुँचने के बाद लगभग दस दिन में बीमारी के निम्न लक्षण पशु में दिखाई देने लगते है-

- अचानक तेज बुखार
- श्वसन दर व हृदय धड्कन में वृद्धि
- भूख में कमी, जुगाली बन्द व दूध में निरन्तर गिरावट
- रोग की शुरुवात में कब्ज फ़िर दस्त
- लाल रुधिर कणिकाओ के टूटने से हिमोग्लॉबिंन पेशाब के साथ निकलता है , जिसके कारण पेशाब का रंग कोफ़ी जैसा दिखता है अतः इस रोग को लहुमूतिया (रेड वॉटर) बीमारी भी कहा जाता है।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

- रोग के शुरुआत में आँख की पुलती सुर्ख लाल फिर सफेद
- रक्ताल्पता की वजह से पीलिया
- ग्याभन पशु में गर्भपात
- अस्थायी बुखार की वजह से नर बैलों में बन्ध्यता
- रोग की अंतिम अवस्था में पिछले पैरों में लकवा मार जाने के कारण पशु निढाल होकर गिर जाता है, दौरे पड़ने लगते है तथा कोमा के बाद मृत्यु हो जाती है।
- घोड़ों में मुख्यतः पीलिया पाया जाता है इसलिए इसे बिलीयरी फीवर भी कहते है।
- कुतों में लाल रुधिर कणिकाए तेजी से खत्म होतीं हैं जिसकी वजह से दिमा गी दोरे पड़ना जैसी समस्या हो सकती हैं।

## निदान

- बीमारी के लक्षणों द्वारा
- किलनियो की प्रचुर उपलब्धता
- रोग के प्रकोप का इतिहास जानकर
- सुनिश्चित निदान के लिए काँच की पटिट्का पर रक्त को अभिरन्जित करके सूक्ष्मदर्शी में बबेसिआ को आकार से पहचान कर
- जैव प्रौद्योगिकी तक नीक जैसे एलिसा व पीसीआर परीक्षण द्वारा बहुत सूक्ष्म व विभिन्न प्रजाति के संक्रमण को विभेद व वर्णित कर सकते हैं।

## उपचार

सही देखभाल व उचित समय पर उपचार ना मिलने से पशु की मौत भी हो सकती हैं , कारगर उपचार हेतु निम्नलिखित दवा बाजार में उपलब्ध है,

- डाईमिनेजिन एसिट्रेट(बेरेनिल)
- इमिडोकार्ब
- टेट्रासाईक्लीन
- सहायक उपचार के लिए फ्लूड थेरेपी , एंटीइंफ्लैमेट्री, व कॉर्टिकॉस्ट्रॉइड भी दिया जाना चाहिंए।
- अत्यधिक रक्ताल्पता की परिस्थिति में रक्ताधान से पशु की जान बचाई जा सकती हैं।

नोट- दवा के दुष्प्रभाव से बचने के लिए उपरोक्त उपचार पशु चिकित्सक की देखरेख में ही लेना चाहिए ।

## रोकथाम एवम् नियन्त्रण

- पशु को लक्षण प्रकट होते ही रक्त की जाँच करवानी आवश्यक हैं।
- अत्यधिक चिंचड प्रभावित क्षेत्रों में हर 4-6 हफ़्तों से चिंचडनाशक का छिड़काव करना चाहिए।
- समय - समय पर चिंचडरोधी टीकाकरण से बीमारी के प्रकोप से बचा जा सकता हैं।
- जैविक् नियन्त्रण के लिए बतख, मुर्गी, बटेर आदि पक्षी चिंचड को खाकर के नष्ट कर सकते हैं।

- पशुओं के आस-पास का वातावरण साफ व सूखा रखना चाहिए।
- नये पशु को लाने से पहले जाँच कर लेनी चाहिए की वो बबेसिआ अ थवा चिंचड से संक्रमित तो नहीं हैं।
- रोगी पशु को स्वस्थ पशुओं से पृथक रखना चाहिए।
- बबेसिआ संक्रमण से उबरने के बाद पशुओं में चार साल तक रोग प्रतिरोधक क्षमता बनी रहती हैं।

पशुपालक मित्र 2(3): 16-18 ; जुलाई, 2022
ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in 

# पशुओ के लिए सम्पूर्ण संघनित आहार खण्ड (फीड ब्लॉक)

*डॉ. अशोक कुमार पाटिल, डॉ. गया प्रसाद जाटव एवं डॉ. विवेक अग्रवाल*

***पशु चिकित्सा एवं पशु पालन महाविद्यालय, महू (म.प्र.)***

एक सफल पशुधन उत्पादन काफी हद तक पर्याप्त मात्रा मे संतुलित आहार की नियमित आपूर्ति पर निर्भर करता है। पशुपालन मे कुल लागत का 70 प्रतिशत से अधिक अकेले आहार खिलाने पर खर्च होता है, इसलिए ज्यादा लाभ प्राप्त करने हेतु हमे पशु के आहार निर्माण पर विशेष ध्यान देना चाहिये। किसान अपने पारपरिक ज्ञान के आधार पर , जो उन्हें पीढ़ी दर पीढ़ी प्राप्त हुआ है तथा स्थानीय क्षेत्र में उपलब्ध एक या दो खाद्दय पदार्थ जैसे कि चोकर , खली, चुनी, अनाज के दाने आदि और मौसम के हिसाब से हरा चारा तथा फसल अवशेष जैसे भूसा अपने पशुओं को खिलाते रहते है। पशुओं को दिए जाने वाले चारे तथा आहार की मात्रा ज्यादातर उनकी आवश्यकताओं से कम या अधिक होती है तथा अनके आहार में प्रोटीन , ऊर्जा या खनिज का असंतुलन हो जाता है। हमारे यहा पशुओ को मुख्यत: फसलों के अवशिष्ट खिलाकर ही पाला जाता है ओर हम जानते है की इन फसल अवशेषो मे पोषक तत्वो की बहुत कमी होती है जिसका सीधा प्रभाव पशु के उत्पादन पर पड़ता है। भारत मे किसान अक्सर भूसे या स्टोवर को बिना भिगोये ओर बिना टुकड़े किए या अर्ध-कटे हुए रूप मे पशु को खिलाते है ओर दाना उन्हे अलग से देते है , जो पशु दूध नहीं देते उन्हे समान्यत: दाना नहीं दिया जाता जिससे पशु की आगामी समय मे वृद्धि ओर उत्पादन प्रभावित होता है। बिना कटा हुआ भूसा पशु को अधिक सुपाच्य भागों का चयन करने और कम पचने योग्य भागों को पीछे छोड़ने के लिए पूर्ण विकल्प प्रदान करता है, जिसके परिणामस्वरूप पर्याप्त फ़ीड अपव्यय होता है। इसके अलावा, पशु को कटे हुए भूसे की तुलना में बिना कटे हुए भूसे को चबाने के लिए अधिक ऊर्जा खर्च करने की आवश्यकता होती है जिससे पशु की वृद्धिदर ओर उत्पादन प्रभावित होता है। इस प्रकार से आहार खिलाने मे पशु जूठन के रूप मे काफी सारा चारा छोड़ देता है जो किसान के लिए आर्थिक दृष्टि से नुकसान दायक है।

हमारे पशु पोषण के वैज्ञानिको ने एक नई तकनीक का आविष्कार किया है जिसे हम "संघनित सम्पूर्ण फीड ब्लॉक (आहार खण्ड)" कहते है। इस ब्लॉक को बनाते समय हम खाद्य पदार्थो जैसे चारा और दाना को एक निश्चित अनुपात मे मिलाकर ओर मशीन मे डालते है जिससे की मशीन मे उच्च दाब के कारण यह संघनित होता है ओर फीड ब्लॉक के रूप मे हमे प्राप्त होता है। पूर्ण फ़ीड ब्लॉक को इस प्रकार भी परिभाषित करते है की "यह एक संघनित किया हुआ उच्च घनत्व का ठोस उत्पाद है जिसमे पशु की पोषक तत्वों की आवश्यकताओं के अनुसार चारे एवं दाने को एक निश्चित अनुपात मे मिलाकर ओर मशीन द्वारा उच्च दाब देते हुये संघनित करते है। इस प्रकार से बने फीड ब्लॉक मे मुख्य पोषक तत्व यानी ऊर्जा, नाइट्रोजन, खनिज और विटामिन संतुलित मात्रा मे होते है ओर पशु के स्वास्थ्य के लिए उत्प्रेरक पूरक का कार्य करते है। इस ब्लॉक को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना काफी आसान होता है इसके साथ ही अगर कुछ अपारंपरिक खाद्य पदार्थ मिलाकर हमेआहार बनाना हो तो वो भी बड़े आसानी से संभव है।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

## फीड ब्लॉक के अवयव:

फीड ब्लॉक मे मुख्य रूप से मोटे चारे ओर दाने होते है साथ ही पशु की अवश्यकता अनुसार कुछ लघु अवयव के रूप मे सूक्ष्म पोषक तत्व जैसे खनिज ओर विटामिन तथा अन्य भोज्य योजक होते है । फीड ब्लॉक को हम भूसा, दाना, शीरा, खनिज, विटामिन तथा नमक मिलाकर भी बना सकते है जिससे इसमे पोषक तत्वो की मात्रा बढ़ जाती है ओर इसी के साथ इन्हे लंबे समय तक संग्रहण कर सकते है ओर अन्य लंबी दूरी के स्थानो पर भी आसानी से ले जा सकते है । फीड ब्लॉक को समान्यत: स्थानीय रूप से उपलब्ध चारे एवं दानो को मिलाकर बनाना चाहिए ।

## पूर्ण फीड ब्लॉक के लाभ :

- फीड ब्लॉक खिलाने के बाद पशुओं को अलग से आहार देने की जरूरत नहीं होती है क्योंकि इसमें मिनिरल मिक्चर, भूसा आदि संपूर्ण आहार मिलाया जाता है।
- पशु को अपनी अवश्यकता अनुसार सारे पोषक तत्व एक साथ प्राप्त होते है जिससे की रुमेन (जुगाली करने वाले जानवर के पेट का मुख्य भाग) के सूक्ष्मजीवो द्वारा किण्वन क्रिया बेहतर होती है और आहार की पाचकशीलता बढ़ जाती है ।
- इससे आहार ग्रहण में आसानी होती है , आहार की कम बर्बादी होती है , रूमेन के वातावरण को स्थिर बनाए रखता है और पाचन क्षमता में सुधार करता है।
- ब्लॉक खिलाने से पशु आहार का अपव्यय भी कम करता है क्योकि पशु च्यनात्मक भोजन नहीं कर पाता है ।
- इससे पशुओं की दुग्धकाल की अवस्था को अनुकूलित किया जा सकता है । अतः इससे उत्पादकता में वृद्धि करने में योगदान मिलता है।
- फीड ब्लॉक में मुख्य रूप से फसल अवशेष जैसे गेहूं का भूसा , धान का भूसा, सूखे गन्ने का अग्रभाग इत्यादि शामिल कर सकते हैं, जो स्थानीय स्तर पर भरपूर मात्रा में उपलब्ध होते हैं
- इन फसल अवशेषों का उपयोग करने से इन्हें खेतों में जलने से रोका जा सकता है , इस प्रकार पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभाव को कम किया जा रहा है ।
- पशु को अगर कुछ दवाईया या अन्य सूक्ष्म पोषक पदार्थ देना हो तो इन्हे फीड ब्लॉक मे मिलाकर आसानी से खिला सकते है ।
- हमारे वैज्ञानिको ने शोध मे पाया है की फीड ब्लॉक खिलाने से आहार ग्रहण शीलता मे सार्थक रूप से बढ़ोतरी होती है ।
- फीड ब्लॉक खिलाने से बछड़ो मे वृद्धि दर मे सार्थक बड़ोतरी पाई गयी है ।
- फीड ब्लॉक खिलाने से पशु की दुग्ध उत्पादन क्षमता के साथ साथ उसकी प्रजनन क्षमता भी अच्छी हो जाती है ओर पशु की रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ती है ।
- इस माध्यम से एक उच्च्य गुणवत्ता वाला आहार सीमित लागत मे वर्ष भर उपलब्ध हो सकता है।
- फीड ब्लॉक के रूप मे चारे का भंडारण ओर परिवहन सस्ता है ओर इसमे श्रम की भी बचत होती है । फीड ब्लॉक बनाने से चारे के भंडारण में तीन गुना जगह को बचाया जा सकता है।
- इस ब्लॉक को प्राकृतिक आपदाओ मे प्रभावी लागत मे आसानी से ले जाया जा सकता है ।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

पशुपालक मित्र
पशुपालन को समर्पित त्रिमासिक पत्रिका ISSN: 2583-0511(Online)

## लेख भेजने के लिए निर्देश :

- लेख हिन्दी में मंगल फॉन्ट एवं microsoft word में होने चाहिये ।
- लेख पशुपालन से संबन्धित होना चाहिये।
- लेख में वैज्ञानिक या तकनीक शब्दों का कम से कम प्रयोग होना चाहिए ।
- लेख की भाषा ऐसी होनी चाहिए कि पशुपालक को समझने में परेशानी न हो ।
- लेख के प्रकाशन का निर्णय संपादक का होगा।
- लेख का प्रकाशन निः शुल्क होगा ।
- लेख को प्रकाशन के लिए ईमेल आई डी pashupalakmitra1@gmail.com पर भेजना होगा।
- लेखक को निम्न प्रारूप में एक स्वहस्ताक्षरित प्रमाण पत्र लेख के साथ सलग्न करना होगा प्रमाणित किया जाता है कि संलग्न लेख...शीर्षक............... लेखक ...लेखक का नाम ............ द्वारा लिखित एक मौलिक, अप्रकाशित रचना है, तथा इसे प्रकाशन के लिए किसी अन्य पत्रिका में नही भेजा गया है।
- लेख में वर्णित सूचनाओं का दायित्व लेखक का होगा , संपादक का नही ।